मेहनत ने दिखाए रंग तो खुले किस्मत के ताले

एकेटीयू दीक्षांत

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के 13 वें दीक्षांत समारोह में शनिवार को मेडल पाकर छात्र-छात्राओं के चेहरे खुशी से खिल उठे • हिन्दुस्तान

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

एसआरएम कॉलेज की छात्रा तन्जीब जहरा के लिए शनिवार जिंदगी का सबसे यादगार दिन बन गया। वेद मंत्रों का उच्चारण... और उसके बीच मंच से यूनिवर्सिटी टॉपर के रूप में गोल्ड मेडल के लिए सबसे पहला नाम जहरा का पुकारा गया। एक ओर ऑडिटोरियम में तालियां गूंज उठीं तो दूसरी ओर जहरा की आंखें नम हो गईं। बीटेक सिविल इंजीनियरिंग 2014-15 में सर्वाधिक अंकों के लिए उसे यह मेडल दिया गया। राज्यपाल राम नाईक और केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह के हाथों से ये मेडल पाना उसके लिए एक सपने के पूरा होने जैसा है। जहरा कहती है कि इन लम्हों को वे जिंदगी में कभी भुला न पाएंगी।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय (एकेटीयू) के 13 वें दीक्षांत समारोह में शनिवार को ये नजारा आम था। इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित समारोह में केन्द्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह, राज्यपाल राम नाईक, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष पद्मश्री एएस किरन कुमार, प्राविधिक शिक्षा राज्य मंत्री फरीद महफूज किदवई के हाथों से पदक और डिग्री पाकर मेधावी छात्र-छात्राओं के सपनों को जैसे पंख लग गए।

दीक्षांत समारोह का आगाज शैक्षिक यात्रा के साथ किया गया जो सुबह करीब 9.25 बजे ऑडिटोरियम में कुलाधिपति राज्यपाल राम नाईक की अनुमति के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक ने विश्वविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके साथ ही समारोह में बैठे छात्रों, अभिभावकों का इंतजार खत्म हो गया और उपाधियों का वितरण शुरू किया गया। पीएचडी के बाद स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक पाने वालों को सम्मानित किया गया।

इसरो अध्यक्ष को जाना पड़ा : इसरो अध्यक्ष एएस किरन कुमार कुलाधिपति से मानद उपाधि लेने के कुछ ही मिनट बाद समारोह छोड़कर जाना पड़ गया। आयोजकों ने बताया कि उन्हें सुबह 11 बजे की फ्लाइट पकड़नी थी। हैदराबाद में एक यूनिवर्सिटी के कार्यक्रम में जाना था।

इनको मिले स्वर्ण पदक

- तन्जीब जहरा : श्री राम स्वरूप मेमोरियल इंजीनियरिंग कॉलेज लखनऊ
- प्रतीक्षा वार्ष्णेय : अजय कुमार गर्ग इंस्टीट्यूट गाजियाबाद
- सोनम द्विवेदी : प्रानवीर सिंह इंस्टीट्यूट कानपुर
- साक्षी गंभीर : अजय कुमार गर्ग इंजीनियरिंग कॉलेज गाजियाबाद
- नकुल गर्ग : कृष्णा इंस्टीट्यूट गाजियाबाद
- साक्षी मिश्रा : कृष्णा इंस्टीट्यूट गाजियाबाद
- प्रियंका गुप्ता : इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ कारपेट टेक्नोलॉजी भदोही
- सुमित : अलीगढ़ कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी
- श्वेता त्रिपाठी : डॉ. अम्बेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी फॉर हैंडीकैप, कानपुर
- शिवम : केआईटी स्कूल ऑफ फार्मेसी गाजियाबाद
- उजैर अशफाक : हेरिटेज इंस्टीट्यूट आगरा
- प्रियंका अवस्थी : श्री राम स्वरूप मेमोरियल इंजीनियरिंग कॉलेज लखनऊ
- दिवी अरोरा : अजय कुमार गर्ग इंस्टीट्यूट गाजियाबाद
- मीत फतेवर : सुंदरदीप कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर गाजियाबाद
- आकृति सिंघल : विद्या इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी मेरठ
- प्रियांशी तिवारी : एसआरएम कॉलेज लखनऊ

15 को मिले कांस्य पदक

- निधि गौर : नोएडा इंस्टीट्यूट
- अंबिका अग्निहोत्री : कानपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
- मेधा : अजय कुमार गर्ग इंजीनियरिंग कॉलेज गाजियाबाद
- रुपाली तिवारी : एसआरएम कॉलेज लखनऊ
- कामनात अख्तर : अजय कुमार गर्ग कॉलेज गाजियाबाद
- अवलीन कौर : कृष्णा इंस्टीट्यूट गाजियाबाद
- अमर दुबे : टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट कानपुर
- मृदुला शर्मा : मेरठ इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
- गरिमा चौहान : आरबी नार्थलैंड इंस्टीट्यूट ग्रेटर नोएडा
- जूही सागर : ब्रह्मानंद ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस बुलंदशहर
- नमिता : श्री राम स्वरूप मेमोरियल इंजीनियरिंग कॉलेज लखनऊ
- अंशी जैन : मेरठ इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
- सौम्या : सुंदरदीप कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर
- प्रिया सैथ : एक्सिस इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी कानपुर
- करुणा धनकानी : प्रानवीर सिंह इंस्टीट्यूट कानपुर

स्वायत्तशासी संस्थाओं के छात्रों को मेडल

पहली बार एकेटीयू स्वायत्तशासी संस्थाओं के साथ मदन मोहन मालवीय विश्वविद्यालय केटीयर को भी मेडल दिए गए।

- बीआईईटी झांसी : विंध्यवासिनी पाण्डेय, नीलू सिंह, रुचि चौधरी
- एचबीटीआई कानपुर : आयुषी केसरवानी, नेहा शर्मा, विशाल यादव
- आईईटी लखनऊ : यतेन्द्र कुमार शर्मा, अकांक्षा पाण्डेय, सिद्धार्थ पाण्डेय
- केएनआईटी सुल्तानपुर : वर्तिका त्यागी, शिवम अग्रवाल, ब्रजेश कुमार

16 को मिले रजत पदक

- शुभी श्रीवास्तव : बीबीडी एनआईटी
- पूर्वी गोयल : कृष्णा इंजीनियरिंग कॉलेज गाजियाबाद
- समा परवीन : श्री राम स्वरूप मेमोरियल इंजीनियरिंग कॉलेज लखनऊ
- कृतिका कपूर : अजय कुमार गर्ग इंजीनियरिंग कॉलेज गाजियाबाद
- सुरभि अग्रवाल : फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी आगरा
- कार्तिकेय द्विवेदी : आईएमएस इंजीनियरिंग कॉलेज गाजियाबाद
- रोचक राठौर : इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ कारपेट टेक्नोलॉजी भदोही
- रिचा त्रिपाठी : आईएमएस कॉलेज गाजियाबाद
- छाया शर्मा : बीबीएस इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मा ग्रेटर नोएडा
- प्रतिभा : आईईसी इंस्टीट्यूट ग्रेटर नोएडा
- कृतिका अग्रवाल : गणेश लाल बजाज इंस्टीट्यूट ग्रेटर नोएडा
- अंशिता जैन : मेरठ इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
- रितु : जेएसएस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस गाजियाबाद
- शेफाली बंसल : विद्या इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी मेरठ
- अपराजिता वर्मा : प्रानवीर सिंह इंस्टीट्यूट कानपुर
- धनंजय सिंह : पीके इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी मेरठ

64 हजार को मिली डिग्री

इस साल डिग्री लेने वालों की संख्या में भी कमी आई है। पिछली साल करीब 74 हजार छात्र-छात्राओं को डिग्री दी गई थी। लेकिन इस बार ये संख्या गिरकर करीब 64 हजार पहुंच गई है।

कोर्स	डिग्री	कोर्स	डिग्री
बी.टेक	48,365	एमबीए	8791
बी.आर्क	361	एमसीए	3621
बी.फार्मा	2152	एम. फार्मा	363
बीएफएडी	24	एम.टेक	552
बीएचएमसीटी	129	एम.आर्क	10

खास रहा 13वां दीक्षांत

एकेटीयू का 13वां दीक्षांत काफी खास रहा। डॉ. कलाम के नाम पर विवि के नामकरण के बाद ये पहला दीक्षांत था। पहली बार ऑटोनोमस स्टेट पाने वाले कॉलेज आईईटी, बीआईईटी झांसी, एचबीटीआई कानपुर जैसे सरकारी संस्थानों के छात्रों को भी दीक्षांत का मंच साझा करने का मौका मिला। पहली बार इनके लिए अलग से मेडल घोषित किए गए।

देरी पर राज्यपाल ने टोका

दीक्षांत समारोह करीब आधा घंटा देरी से शुरू हुआ। समय खिंचता चला गया। इस पर राज्यपाल ने अपने सम्बोधन में टोक दिया। उन्होंने कहा कि निर्धारित कार्यक्रम के तहत उन्हें करीब 10.45 पर बोलना था। लेकिन 11.45 पर बोलने का मौका दिया गया। मजाकिया अंदाज में राज्यपाल बोले कि उन्हें सुभाष चन्द्र बोस जयंती पर एक कार्यक्रम में जाना था। लेकिन यूनिवर्सिटी ने लेट कर दिया।

टेक्नोक्रेट्स को मिलेंगी नौकरियां: राजनाथ

इंजीनियरिंग और तकनीकी की पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए अच्छी खबर है। अगले तीन से साढ़े तीन सालों में केन्द्र सरकार उनके लिए कई नौकरियां लेकर आने वाली है। गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि केन्द्र सरकार जानती है कि तकनीकी और ई-गवर्नेंस से ही कार्यप्रणाली में पारदर्शिता लाई जा सकती है। वह पूरे सिस्टम में इसे लागू करने पर जोर दे रही है। ऐसे में सरकार को ई-गवर्नेंस को सफल बनाने के लिए टेक्नोक्रेट्स की जरूरत पड़ेगी। वहीं समारोह के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री राजनाथ एक शिक्षक के रूप में भी नजर आए। उन्होंने छात्रों से कहा कि सिर्फ ज्ञान, शक्ति और सम्पन्नता होना जीवन में सब कुछ नहीं है, चरित्र का सही होना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि हम भारत को सुपर इकोनॉमिक पावर बनाना चाहते हैं सिर्फ अपनी सुरक्षा के लिए। भारत इंटलेक्चुअल पावर बन चुका है। अब भारत को विश्व गुरु बनाना चाहते हैं। विश्व गुरु बनाने के सारे फंडामेंटल भारत में मौजूद हैं।

इसरो अध्यक्ष को मानद उपाधि

दीक्षांत समारोह में इसरो अध्यक्ष पद्मश्री एएस किरन कुमार को कुलाधिपति राज्यपाल राम नाईक ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। मुख्य अतिथि गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए जीवन में सही और गलत की परख करने की सीख दी।

दीक्षांत समारोह देखने गांव से आए बच्चे

पहली बार लखनऊ में किसी दीक्षांत समारोह में छात्र, अभिभावक और शिक्षकों के बीच ग्रामीण क्षेत्रों से आए बच्चे भी इसके गवाह बने। ये बच्चे दसवीं और 12वीं कक्षाओं के थे। जिन्हें विश्वविद्यालय प्रशासन ने दीक्षांत समारोह देखने के लिए विशेष अनुमति दी थी।

संसाधन सबकुछ नहीं होते: किरन कुमार

इसरो अध्यक्ष पद्मश्री एएस किरन कुमार ने ब्रेन ड्रेन की समस्या पर कहा कि 70 के दशक में जब उन्होंने काम शुरू किया तो देश के बाहर जाकर काम करने के कई मौके थे लेकिन उन्होंने देश में रहकर काम करने का फैसला लिया। उन्होंने कहा कि पहली बार में मंगल यान का सफल परीक्षण करके हमने साबित कर दिया है कि संसाधन सबकुछ नहीं होते। कम संसाधनों में भी आगे बढ़ा जा सकता है। उन्होंने छात्रों से कहा कि आज दुनिया भर के इंजीनियर नई खोज के लिए प्रकृति की ओर जा रहे हैं। कई अंतरराष्ट्रीय उद्योग घराने इस पर काम कर रहे हैं। वह प्रकृति से प्रेरित होकर मशीनें तैयार कर रहे हैं।

अतिथियों ने कहा

...कहीं लड़कों को न पड़ जाए आरक्षण की जरूरत

राम नाईक, राज्यपाल

राज्यपाल राम नाईक ने मेडल व डिग्री पाने वाले मेधावियों को सफलता की बधाई के साथ-साथ नसीहत भी दी। उन्होंने कहा कि वर्ष 1954 से पहले मैंने बीकॉम किया था। हमारे समय में क्लास में सिर्फ दो लड़कियां ही थीं। आज मंच पर 62 मेडल दिए गए, लेकिन इनमें से सिर्फ 14 मेडल ही छात्रों को मिले। कहीं ऐसा न हो कि आपको भी आने वाले समय में 14 प्रतिशत आरक्षण की जरूरत पड़ जाए।

याद आ गए अपने दिन

फरीद महफूज किदवई, राज्यमंत्री प्राविधिक शिक्षा

राज्यमंत्री प्राविधिक शिक्षा फरीद महफूज किदवई ने कहा, आज आप लोगों को गाउन में देखकर 30-35 साल पहले का वक्त याद आ गया। जब मुझे एएमयू में मास्टर की डिग्री मिली थी। उन्होंने छात्रों को सीख दी कि आगे जिंदगी में मुश्किलें मिलेंगी पर यही सफलता तक पहुंचाएगी। उन्होंने प्रदेश सरकार के सौर ऊर्जा मिशन को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि सभी इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट कॉलेजों को निर्देश दिए हैं कि 25 किलोवाट के सोलर ऊर्जा का उत्पादन किया जाए और एलईडी लगवाई जाए।

किसान के बेटे को मिला गोल्ड

सुमित कुमार

बुलंदशहर के रहने वाले सुमित ने बीटेक इन एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में 81 प्रतिशत अंकों के साथ टॉप किया। यह सफलता का श्रेय पिता अनिल सिंह और मां को देते हैं। सुमित ने बताया कि किसान पिता के पास पैसे नहीं थे। लोन लेकर पढ़ाई की और गोल्ड मेडल पाया। उसने कहा कि वह आगे चलकर वैज्ञानिक बनना चाहता है और किसानों की बेहतरी के लिए नई खोज करना चाहते हैं। ताकि किसानों के लिए खेती करना आसान हो। वह नए प्रयोग कर सकें और ज्यादा बेहतर फसल तैयार कर सकें जिससे उनका आर्थिक स्तर बेहतर हो।

परिधान की हुई तारीफ

दीक्षांत में खास बात पोशाक भी रही। गाउन और कैप को छोड़ टेक्नोक्रेट्स अंगवस्त्र और पगड़ी में नजर आए। छात्र-छात्राओं की इस पोशाक की अतिथियों ने खुलकर तारीफ की। सबने कहा कि दीक्षांत समारोहों की पोशाक भारतीय ढंग की होनी चाहिए। राज्यमंत्री महफूज किदवई ने तो यहां तक कह दिया कि अब लग रहा है कि हम ब्रिटिश सोच से भी बाहर निकल रहे हैं। यह काफी अच्छी बात है। कुलपति प्रो. विनय पाठक ने बताया कि ये दीक्षांत परिधान विश्वविद्यालय से संबद्ध कॉलेज के छात्रों ने ही खुद डिजाइन और तैयार किए हैं। सबने ही इसकी सराहना की। छात्र छात्राओं को भी बदली पोशाक बहुत पसंद आई।

टॉपर्स बोले

मैं आईईएस बनना चाहती हूं। सफलता के लिए जरूरी है कि लक्ष्य के साथ पढ़ाई की जाए। मेरी सफलता के पीछे मेरे माता पिता का योगदान है।

तन्जीब जहरा, सिविल ब्रांच बीटेक

सफलता के लिए लक्ष्य तय करना होगा और योजना बनाकर पढ़ाई करनी होगी। मेरे पिता अजय कुमार अवस्थी बिजनेस मैन हैं और मां कनकलता गृहिणी हैं।

प्रियंका अवस्थी, एमबीए

मैं शिक्षिका बनना चाहती हूं। क्लास हमेशा अटेंड करनी चाहिए और रोज तीन घंटे पढ़ाना चाहिए। मेरे पिता आरके गुप्ता शिक्षक व मां मंजु गुप्ता गृहिणी हैं।

प्रियंका गुप्ता, बीटेक (कॉर्पेट एंड टेक्सटाइल)

मैं रिसर्च करना चाहती हूं। सफलता का शार्टकट नहीं होता है। नियमित पढ़ाई जरूरी है। मेरी सफलता का श्रेय शिक्षकों और माता-पिता को है।

साक्षी मिश्रा, बीटेक (मैकेनिकल)

मैं आईईएस बनकर सरकारी व्यवस्था में सुधार लाना चाहता हूं। मेरा मानना है कि किसी भी नए टॉपिक को पढ़ने से पहले पिछले का रिवीजन जरूरी है।

यतेन्द्र कुमार शर्मा, बीटेक (मैकेनिकल)

मैं फैशन के क्षेत्र में पढ़ाई करने के बावजूद शिक्षिका बनना चाहती हूं और छात्रों को भारतीय परिधानों के महत्व के बारे में पढ़ाना चाहती हूं।

आकृति सिंघल, बीटेक (फैशन एंड डिजाइन)

मैं टीसीएस में नौकरी करती हूं और आईईएस बनना चाहती हूं। मेरा मानना है कि ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से पढ़ाई करनी चाहिए।

प्रियांशी तिवारी, बीटेक (इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी)

मैं आगे चलकर मैनेजर बनना चाहता हूं। मेरा मानना है कि जिन्दगी में हमेशा टाइम मैनेजमेंट का ध्यान रखना चाहिए।

कार्तिकेय द्विवेदी, बीटेक (मैकेनिकल)